TFRI conducted Training on NTFPs-Lac

Under TRIFED, Govt. of India funded training programme on 'Capacity building on collection, sustainable harvesting and its processing for NTFP gatherer in M.P.' Under this training programme, a series of hands on trainings on 'Sustainable harvesting, collection and processing of Lac and Harra, was organized by the Silviculture, Forest management and Agroforestry Division of Tropical Forest Research Institute, Jabalpur (M.P.) in nine district unions viz. Tamia, Lakhnadon, Baihar, Paraswada, Lamta, Lanji, Kirnapur, Balaghat and Baraseoni of Madhya Pradesh held from 22/10/2018, 25/10/2018, and 29/10/2018 to 1/11/2018 respectively. Dr. Nanita Berry, Scientist 'E' and Nodal Officer (MFP-training) briefed about the training programme during the inaugural session. She explained scientific method of Lac cultivation and its management for quality product with live demonstration and finally its value addition to get additional income. Also she informed to the participants about the Minimum Support Price (MSP) for 12 NTFPs as fixed by the State Madhya Pradesh Minor Forest Products, Bhopal (M.P.). Dr. HariOm Saxena delivered his lecture on Harra. During the programme, Dr. Kiran Bisen, District Forest Officer, Tamia (Chhindwara, West) informed the participants that forest department has initiated work on Lac and its processing by women SHGs and started earning by their own. Dr. Anil Kumar, Certification officer, MFP-federation, Bhopal (M.P.) informed to the participants that MFP federation is going to establish 'Apni Dukan' to purchase selected 12 NTFPs @ its MSP to avoid the middlemen's share. Shri S.K. Prajapati, Dy. Manager, MFP-federation, Paraswada, (Balaghat, North) told that they are interested to grow the Lac, but they don't have good quality of Lac. Shri Gopal Singh Baghel, SDO, Lakhnadon (Seoni, North) is more interested to introduce new Lac host for quality broodlac. Shri Naresh Kakodia, Forest Range officer, Lamta (Balaghat, South) informed that people are doing traditional practices and not aware how to cultivate and processing. During each training programme more than fifty participants and other forest officials were participated. Programme was well assisted by Shri ITK Dilraj, STO, and Santosh Choubey, TO, TFRI. At the end of the programme, Dr. S. Saravanan, Scientist 'E' extended vote of thanks.

Glimpses of the trainings

Plate 1. Inaugural session of training programme at Tamia,Chhindwara(West)

Plate 2. Dr. Kiran Bisen, DFO, Chhindwara (West) deliberating her speech at Tamia.

Plate 3: Dr. Nanita Berry, Nodal officer delivering lecture at Tamia,Chhindwara(W) on 22nd October, 2018

Plate3.Dr. Anil Kumar, Certification officer, MFP-Federation, Bhopal(M.P.) explaining about MSP

Plate 4. Lecture session at Tamia, Chhindwara (West)

Plate 5.: A group of participants under the training programme at Lakhnadon district union of NTFPs.

Plate 6: Discussion with the NTFP gatherer held on 25/10/2018 at Seoni(M.P.)

Plate6: NTFP gatherer explaining his experience on Lac harvesting and selling at Baihar, Balaghat(North)

Plate 8: A group of participants during the training programme held on 29th October,2018

Plate 9: A view of training cum interaction session held at Paraswada,Balaghat(South)

Plate:10: Shri S.K.Prajapati, Dy. Manager ,MFP-Federation Balaghat(South) addressing to the participants

Plate 11. A view of training programme at Lamta (Balaghat, North) district union on 30/10/2018.

Plate 12. Lecture session at East Lanji, Balaghat (South) on 31/10/2018

Plate13. A view of training at Baraseoni, Balaghat (South) on 1/11/2018

Plate14. Interaction with the Lac grower during lecture session at Baraseoni, Balaghat (South) on 1/11/2018

Media coverage

वैज्ञानिक डॉ.बैरी ने किसानो का बताया कैसे करे लाख की खेती

काष्ठागार डिपो सभा कक्ष में आयोजित हुआ प्रशिक्षण

दिव्य एक्सप्रेस/लांजी। लांजी काष्ठागार डिपो के सभाकक्ष में गत दिवस वन विभाग द्वारा लाख सहित अनेक अन्य जंगली उपज की खेती से संबंधित प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया जो कि लघुवनोपज के संवहनीय विदोहन पर प्रशिक्षण था, यह प्रशिक्षत ट्राईफेड द्वारा पोषित एमएफसी एवं एमएससी योजना अन्तर्गत किसानों को प्रशिक्षित किया जा रहा है। किसानो को प्रमुख रूप से प्रशिक्षत वैज्ञानिक डॉ.ननीता बैरी एवं उनकी टीम के द्वारा प्रशिक्षित किया गया। इस दौरान वनपरिक्षेत्र अधिकारी जेएन तिवारी, डिप्टी सोनवाने, डिप्टी तरोने सहित वन विभाग के अधिकारी कर्मचारी उपस्थित रहे।

राज एक्सप्रेस

सिवनी-बालाघाट-मंडला

जबलपुर मंगलवार, 30 अक्टूबर, 2018

लघु वन उपज लाख के उत्पादन में वैज्ञानिकों का योगदान

लखनादौन (आरएनएन)। कृषि के अतिरिक्त वनो पर आधारित आजीविका में लघु वनोपज महुआ, आंवला, अचार (चार बीजी), सीताफल, भिलमा, गोंद और लाख ग्रामीणों की अतिरिक्त आय का मुख्य स्रोत है। लाख वनो पर आधारित ग्रामीणों की आजीविका का अतिरिक्त संसाधन सिद्ध हो रहा है। ग्रामीणों की आय में इजाफा हो रहा है। परंतु इन्हें उचित मुनाफा और अच्छी फसल लेने में अनेको प्रकार की परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। ग्रामीणों की स्थिति को देखते हुये वन संवर्धन, प्रबंधन एवं कृषि वानिकी प्रभाग उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर के द्वारा विषय विशेषज्ञ नोडल अधिकारी प्रशिक्षण लघु वनोपज डॉ. ननिता बेरी वैज्ञानिक-ई एवं डॉ. एस. सारावनन वैज्ञानिक-ई के द्वारा उत्तर एवं दक्षिण वनमण्डल सिवनी के लखनादौन, बरघाट और कुरई में लाख संग्राहकों को एक दिवसीय प्रशिक्षण दिया गया। लाख क्या है, लाख एक सूक्ष्म कीट केरिया लक्क के शरी में पाए जाने वाली

विशेष ग्रंथियों से स्त्रावित होने वाला पदार्थ है। लाख के दो प्रकार होते है -रंगीनी लाख एवं कुसमी लाख। डॉ. ननिता ने लाख संग्राहकों को बहुत ही सूक्ष्म और विस्तृत जानकारी दी जिसमें उन्होंने बताया कि लगभग 50 प्रकार के वृक्षों से लाख उत्पादन का कार्य किया जा सकता है। कुछ वृक्ष इस प्रकार है - कुसुम खैर ,बेर ,पलाश , घोंट के पेड़ और अरहर के पौधे, शीशम पाकड़ ,गूलर ,पीपल ,बबूल ,पोर हो और शरीफा इत्यादि परंतु सिवनी जिला की प्राकृतिक संरचना अनुरूप लाख के पोषक वृक्ष कुसुम, पलाश एवं सेमीयालता मुख्य स्रोत है। लाख के प्रत्यारोपण पूर्व उक्त वृक्षों की कोमल शाखाओं का धारदार हथियार से शाखकर्तन किया जाता है। जिससे कटे हुये वृक्षों में कोमल शाखाएँ आ जाती है, शाखाओं से निकलने वाले रस को लाख का कीड़ा सहजता से चूस लेते है एवं इन्हीं शाखाओं में अण्डों को छोड़ देता है। संवहनीय विदोहन - जून-जुलाई में लगाई लाख अक्टूबर माह में कार्तिक एवं अक्टूबर में लगाई लाख मार्च अप्रैल में काटी जानी चाहिए। अपरिपक्व लाख (अरी लाख) अप्रैल के अंतिम सप्ताह में काटें। बीहन लाख के लिए जून-जुलाई में काटें।

टहनियों से लाख सरौते से ही काटे। कम से कम 10 से 20 प्रतिशत लाख पूर्नउत्पादन के लिए टहनियों में छोड़ दें। छाया में और हवा में ही सुखाएँ। शीघ्र से शीघ्र लाख को फैक्ट्री तक पहुँचाए। लाख उत्पादन - यदि पलाश वृक्ष पर औसतन 400 ग्राम बहीन लाख (लाख अण्डे) छोड़ी जाती है तो 5 गुना (2-3 किलो), कुसुम वृक्ष पर औसतन 10 किलो से 7-8 गुना (70-80 किलो) प्रति वृक्ष, बेर वृक्ष पर औसतन 4 किलो से 6-7 गुना (24-30 किलो) फसल प्राप्त की जा सकती है।

लाख का बाजार मूल्य - रंगीनी लाख का बाजार मूल्य 150/-रू. प्रति किलों एवं कुसमी लाख 200रू. से 250/-रू. प्रति किलों है। इस कार्यशाला का आयोजन राजीव गांधी सहभागी वानिकी प्रशिक्षण संस्थान में सम्पन्न हुआ। लाख कीट का प्रबंधन - शत्रू कीटो के लिए कीटनाशक एण्डोसल्फान एवं फफूँदनाशक कारबेन्डाजिम का छिड़काव किया जाता है। जिसमें उत्तर वनमण्डल सिवनी के वनमण्डल अधिकारी गौरव चौधरी के निर्देशन में उपवनमण्डल अधिकारी, छपारा गोपाल सिंह एवं उपवनमण्डल अधिकारी लखनादौन डी.एल. भगत एवं वन परिक्षेत्र अधिकारी माधव राव उइके, सुभाषचंद्र तिवारी एवं लाख संग्राहक ग्राम जमखार, पुर्तरा, रहलोन, लखनादौन उपस्थित रहें।

नईदुनिया
जबलपुर, रविवार 04 नवंबर 2018

वन विभाग कार्यालय में किसानों को लाख कीट पालन का दिया गया प्रशिक्षण

लाख की खेती से आएगी समृद्धि

वारासिवनी। नईदुनिया न्यूज

दक्षिण सामान्य वनमंडल कार्यालय वारासिवनी में वन संवर्धन प्रबंधन और कृषि वानिकी प्रभाग उष्ण कटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान जबलपुर के तत्वावधान में एक दिवसीय लाख प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें विषय विशेषज्ञ, नोडल अधिकारी, प्रशिक्षण लघु वनोपज डॉक्टर ननिता बेरी, वन परिक्षेत्र अधिकारी डीसी वासनिक की मौजूद रहे। इस एक दिवसीय लाख कीट पालन प्रशिक्षण कार्यक्रम में लाख की खेती करने वाले थानेगांव, झाड़गांव, मेंढकी, डोंगरगांव, मंगेझरी, छिन्दीटोला जागपुर के किसानों को पलास के पौधे में लाख कैसे लगाना है सहित अन्य जानकारियां विस्तार से दी गई। ताकि किसान लाख की खेती कर अपनी आर्थिक स्थिति मजबूत कर सके। उन्हें लाख कम दाम में न बेचने के लिए प्रेरित किया गया।

प्रशिक्षण में किसानों को बताया गया कि पलाश के पौधे में लगने वाले लाख का समर्थन मूल्य 130 रुपए प्रति किग्रा है। लेकिन जानकारी के अभाव में किसान कम दाम में विक्रय कर देते है। जिससे उन्हें काफी नुकसान होता है। इसलिए इस बार सरकार ने वन विभाग कार्यालय में अपना दुकान नाम से खोलने वाली है। जहां लाख की खेती 130 रुपए प्रति किग्रा की दर से खरीदा जाएगा। विषय विशेषज्ञ एवं नोडल अधिकारी प्रशिक्षण लघु वनोपज डॉक्टर ननिता बेरी ने बताया कि 12 ऐसे लघु वनोपज है। जिनके न्यूनतम समर्थन मूल्य निर्धारित है। संग्राहकों को उचित मूल्य मिले। यह तब संभव हैए जब उचित विदोहन हो और बालाघाट जिले में बहुत लाख पोषक वृक्ष है। जिस पर लाख के कीड़े पलते है।

पलाश के वृक्ष पर ज्यादा होता है और इसकी दो फसल ले सकते है। इसके अच्छे दामों में विक्रय कर अपनी आर्थिक स्थिति कैसे मजबूत बनाना है। उसके बारे में लाख का उत्पाठन करने वाले कृषकों को जानकारी दी गई है। इस अवसर पर विनोद विंझाड़े, केएल बिसेन, मनोज चौहान, तिरथकुमार जागपुरे, मोनिका नरेन्द्र गिरी, डिलेश्वरी गिरी, पुस्तकला गिरी, विजय उपवंशी, हीरामन सोनवाने सहित अन्य मौजूद रहे।

वारासिवनी। प्रशिक्षण देते हुए अधिकारीगण।

वारासिवनी। प्रशिक्षण में उपस्थित कर्मचारीगण।

वन विभाग कार्यालय में लाख प्रशिक्षण का हुआ आयोजन

हरिभूमि न्यूज, वारासिवनी। नगर में स्थित दक्षिण सामान्य वनमण्डल कार्यालय वारासिवनी में वन संवर्धन प्रबंधन एवं कृषि वानिकी प्रभाग उष्ण कटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान जबलपुर के तत्वावधान में एक दिवसीय लाख प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें विषय विशेषज्ञ एवं नोडल अधिकारी(प्रशिक्षण-लघु वनोपज) डॉ. ननिता बेरी, वन परिक्षेत्र अधिकारी डी सी वासनिक की मौजूद रहे। इस एक दिवसीय लाख प्रशिक्षण कार्यक्रम में लाख की खेती करने वाले थानेगांव, झाडगांव, मेंडकी, डोंगरगांव, मंगेझरी, छिन्दीटोला, जागपुर के किसानों को पलाश के पौधे में लाख कैसे लगाना है? सहित अन्य जानकारियां विस्तार से दी गई। ताकि किसान लाख की खेती कर अपनी आर्थिक स्थिति मजबूत कर सके, उन्हें लाख कम दाम में न बेचने के लिए प्रेरित किया गया। प्रशिक्षण में किसानों को बताया गया कि पलाश के पौधे में लगने वाले लाख का समर्थन मूल्य 130 रुपए प्रति किग्रा. है, लेकिन जानकारी के अभाव में किसान कम दाम में विक्रय कर देते है। जिससे उन्हें काफी नुकसान होता है। इसलिए इस बार सरकार ने वन विभाग कार्यालय में अपना दुकान नाम से खोलने वाली है। जहां लाख की खेती130 रुपए प्रति किग्रा. की दर से खरीदा जायेगा। विषय विशेषज्ञ एवं नोडल अधिकारी (प्रशिक्षण-लघु वनोपज) डॉ. ननिता बेरी ने बताया कि 12 ऐसे लघु वनोपज है, जिनके न्यूनतम समर्थन मूल्य निर्धारित है। संग्राहकों को उचित मूल्य मिले, यह तब संभव है, जब उचित विदोहन हो और बालाघाट जिले में बहुत लाख पोषक वृक्ष है। जिस पर लाख के कीड़े पलते है। पलाश के वृक्ष पर ज्यादा होता है और इसकी दो फसल ले सकते है। इसके अच्छे दामों में विक्रय कर अपनी आर्थिक स्थिति कैसे मजबूत बनाना है? उसके बारे में लाख का उत्पादन करने वाले कृषकों को जानकारी दी गई है। डॉ. बेरी ने बताया कि जिन क्षेत्रों में लाख उत्पादन होता है, उनसे व्यापारी 50 रुपए किग्रा. की दर से खरीदता है, जबकि संघ ने130 रुपए न्यूनतम समर्थन मूल्य निर्धारित किया है। इसलिए अच्छे से खेती करे और लाख को बेचने के लिए लघु वनोपज संघ ने अपनी दुकान वन विभाग में खोल रहे है। इसलिए सभी इन दुकानों में लाख का विक्रय कर वाजिम दाम प्राप्त कर अपनी आर्थिक स्थिति को मजबूत बनाये। वन परिक्षेत्र अधिकारी डी सी वासनिक ने बताया कि लाख की खेती वर्ष में दो बार होती है। प्रशिक्षण में वैज्ञानिक खेती कैसे करना है? उसके बारे में बताया गया है और समय पर काटने के साथ समर्थन मूल्य में विक्रय करने प्रेरित किया गया है। इस अवसर पर विनोद बिंझाड़े, के एल बिसेन, मनोज चौहान, तिरथकुमार जागपुरे, मोनिका/नरेन्द्र गिरी, डिलेश्वरी गिरी, पुस्तकला गिरी, मंजु मुरारी, सरिता गिरी, ओमकार राठौर,तेजराम मालाधरी, धाराप्रसाद लिल्हारे, चतुर्भुज, दयाराम, सुकलाल, धनीराम मड़ावी, सुधीर घोड़ेश्वर, राजेश पथिक, लोकेश टेंभरे, ताराचंद डोंगरे, चंचल चटर्जी, विनय भंवरे, नरेन्द्र सुलकिया, पुरनलाल ठाकरे, विजय उपवंशी, हीरामन सोनवाने सहित अन्य मौजूद रहे।

लघु वनोपज के लाख उत्पादन में वैज्ञानिकों का योगदान

लाख संवहनीय विदोहन और प्रसंस्करण में कार्यशाला संपन्न

सिवनी एक्सप्रेस।

कृषि के अतिरिक्त वनो पर आधारित आजीविका में लघु वनोपज महुआ, आंवला, अचार (चार बीजी), सीताफ्ल, भिलमा, गोंद और लाख ग्रामीणों की अतिरिक्त आय का मुख्य स्रोत है। लाख वनो पर आधारित ग्रामीणों की आजीविका का अतिरिक्त संसाधन सिद्ध हो रहा है। ग्रामीणों की आय में इजाफा हो रहा है। परंतु इन्हें उचित मुनाफा और अच्छी फसल लेने में अनेको प्रकार की परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। ग्रामीणों की स्थिति को देखते हुये वन संवर्धन, प्रबंधन एवं कृषि वानिकी प्रभाग उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर के द्वारा विषय विशेषज्ञ नोडल अधिकारी प्रशिक्षण लघु वनोपज डॉ. ननिता बेरी वैज्ञानिक-ई एवं डॉ. एस. सारावनन वैज्ञानिक-ई के द्वारा उत्तर एवं दक्षिण वनमण्डल सिवनी के लखनादौन, बरघाट और कुरई में लाख संग्राहकों को एक दिवसीय प्रशिक्षण दिया गया। लाख क्या है, लाख एक सूक्ष्म कीट केरिया लक्का के शरी में पाए जाने वाली विशेष ग्रंथियों से स्त्रावित होने वाला पदार्थ है। लाख के दो प्रकार होते है - 1. रंगीनी लाख एवं 2. कुसमी लाख। डॉ. ननिता ने लाख संग्राहकों को बहुत ही सूक्ष्म और विस्तृत जानकारी दी जिसमें उन्होंने बताया कि लगभग 50 प्रकार के वृक्षों से लाख उत्पादन का कार्य किया जा सकता है। कुछ वृक्ष इस प्रकार है - कुसुम ;बीसमपबीमतं ॅजतपरनहंद्धए खैर ;बिंबपं बंजमबीनद्धए बेर ;प्रपचीने रनरनइंद्धए पलाश ;ठनजमं तिवदकवेंद्धए घोंट ;प्रचीने गलसवचलतंद्ध के पेड़ औरए अरहर ;बंदने पदकपबनेद्ध के पौधेए शीशम ;क्संइमतहपं संजपविसपंद्धए पंजमन ;व्नहमपदपं कंसइमतहपवपकमेद्धए सिसि ;सइर्प्रपं जपचनसंजंद्धए पाकड़ ;थ्पवने पदमिबजवतपंद्धए गूलर ;थ्पबने हसवउमतंजंद्धए पीपल ;थ्पबने तमसपहपवेंद्धए बबूल ;।बंबपं तंइपबंद्धए पोर हो और शरीफा इत्यादि परंतु सिवनी जिला की प्राकृतिक संरचना अनुरूप लाख के पोषक वृक्ष कुसुम, पलाश एवं सेमीयालता मुख्य स्रोत है। लाख के प्रत्यारोपण पूर्व उक्त वृक्षों की कोमल शाखाओं का धारदार हथियार से शाखकर्तन किया जाता है। जिससे कटे हुये वृक्षों में कोमल शाखाएँ आ जाती है, शाखाओं से निकलने वाले रस को लाख का कीड़ा सहजता से चूस लेते है एवं इन्हीं शाखाओं में अण्डों को छोड़ देता है। संवहनीय विदोहन - जून-जुलाई में लगाई लाख अक्टूबर माह में कार्तिक एवं अक्टूबर में लगाई लाख मार्च अप्रैल में काटी जानी चाहिए। अपरिपक्व लाख (अरी लाख) अप्रैल के अंतिम सप्ताह में काटें। बीहन लाख के लिए जून-जुलाई में काटें। टहनियों से लाख सरौते से ही काटे। कम से कम 10 से 20 प्रतिशत लाख पूर्नउत्पादन के लिए टहनियों में छोड़ दें। छाया में और हवा में ही सुखाऐं। शीघ्र से शीघ्र लाख को फैक्ट्री तक पहुँचाए। लाख उत्पादन - यदि पलाश वृक्ष पर औसतन 400 ग्राम बहीन लाख (लाख अण्डे) छोड़ी जाती है तो 5 गुना (2-3 किलों), कुसुम वृक्ष पर औसतन 10 किलो से 7-8 गुना (70-80 किलो) प्रति वृक्ष, बेर वृक्ष पर औसतन 4 किलो से 6-7 गुना (24-30 किलो) फसल प्राप्त की जा सकती है। लाख का बाजार मूल्य - रंगीनी लाख का बाजार मूल्य 150/-रू. प्रति किलों एवं कुसमी लाख 200रू. से 250/-रू. प्रति किलों है। इस कार्यशाला का आयोजन राजीव गांधी सहभागी वानिकी प्रशिक्षण संस्थान में सम्पन्न हुआ। लाख कीट का प्रबंधन - शत्रू कीटो के लिए कीटनाशक एण्डोसल्फान एवं फफूंदनाशक कारबेन्डाजिम का छिड़काव किया जाता है। जिसमें उत्तर वनमण्डल सिवनी के वनमण्डल अधिकारी श्री गौरव चौधरी के निर्देशन में उपवनमण्डल अधिकारी, छपारा श्री गोपाल सिंह एवं उपवनमण्डल अधिकारी लखनादौन श्री डी.एल. भगत एवं वन परिक्षेत्र अधिकारी श्री माधव राव उइके, श्री सुभाषचंद्र तिवारी एवं लाख संग्राहक ग्राम जमखार, पुर्तरा, रहलोन, लखनादौन उपस्थित रहें।